Indigenous health practices of tribals in Ranchi District of Jharkhand

R Sinha, V Lakra, B Sharma, A K Dwivedi & B K Jha
Directorate of Extension Education
Birsa Agricultural University, Kanke, Ranchi 6 (Jharkhand)

Abstract
An ethnobotanical survey was carried out among the ethnic groups in Ranchi district of Jharkhand. Traditional use of 41 plant species are documented in this study. These tribals are using 16 plant species to cure gastro-intestinal disorders, 7 each for headache as well as respiratory problems and 11 for the treatment of other health problems prevalent in the study area. India has a variety of tribal population reflecting its great ethnic diversity. Jharkhand is a homeland of 30 tribes including eight primitive tribes which constitute 28% of the total population. Majority of tribal population of Jharkhand lives in the forest ecosystem and has its own socio-cultural pattern and tradition. Tribal communities living in biodiversity rich areas possess a wealth of knowledge on the utilization and conservation of medicinal plants. They have developed this traditional knowledge over several years of observations, trial and error, inference and inheritance. Some of the indigenous technologies are really effective, much cheaper than modern medicines, prepared by locally available natural resources and easy to prepare. The potentiality of indigenous health technologies is increasing being recognized. In present days, this useful knowledge of indigenous people is fast disappearing due to modernization and the tendency among younger generation to discard their traditional lifestyle. There is an urgent need to study and document this precious knowledge for the posterity of human society. Keeping this in view, an ethnobotanical survey was carried out to explore the information regarding the medicinal use of indigenous plants by tribals found in adjoining forest and agricultural fields.
भिन्न एवं अन्य: ज्ञानकौशल द्वारा बांटने के अथवा अन्य विभिन्न साधनों के लिए प्रयोजन उद्देश्य विभिन्न

1. उद्देश्य के मुद्दे
2. प्रयोजन साधन
3. उद्देश्य के विभिन्न रूप
4. उद्देश्य के विभिन्न विभाग
5. प्रयोजन के विभिन्न क्षेत्र
6. उद्देश्य के विभिन्न रूप
7. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
8. उद्देश्य के विभिन्न क्षेत्र
9. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
10. उद्देश्य के विभिन्न क्षेत्र
11. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
12. उद्देश्य के विभिन्न क्षेत्र
13. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
14. उद्देश्य के विभिन्न क्षेत्र
15. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
16. उद्देश्य के विभिन्न क्षेत्र
17. प्रयोजन के विभिन्न विभाग
### सरणी 2 — मिर्दास/ माइड्रेन के उपचार में प्रयोक्त विद्युत पादप

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>व्यायामनक नाम</th>
<th>वेधाचित्रित नाम</th>
<th>पादप प्रकार</th>
<th>पादप भाग</th>
<th>रोग</th>
<th>व्यवस्थापित विद्युत पादप</th>
<th>उपयोग विद्युत पादप</th>
<th>जाति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>अलकुलुक</td>
<td>मुख्यधारी पूर्वार्द्ध हुक</td>
<td>लता</td>
<td>पत्ती</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>बाहरी</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>बेल</td>
<td>इंग्ल सीमित पक्की</td>
<td>बहा पेड़</td>
<td>पत्ती</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>बाहरी</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>किंगमुर/ कर्वलमुर</td>
<td>अन्नमेटिस्ट पैडकुल्टा</td>
<td>पीता</td>
<td>पूरा पीता</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुंहार</td>
<td>उर्दू, मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>शरीफ</td>
<td>अयस्ना स्वास्थ्यसेवा लिना</td>
<td>पेड़</td>
<td>पत्ती</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>बाहरी</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>दूर</td>
<td>लूक्रेअस सिंहीलेठा खेत्र</td>
<td>पीता</td>
<td>जाड़</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>सरसों के तेल में</td>
<td>मुंहार</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>मोहाकदा</td>
<td>साइकेः लेटलस</td>
<td>पीता</td>
<td>कढ़</td>
<td>सिरदर</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुंहार</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>फाड़ेरी</td>
<td>अन्नईक्विटा लूक्रेअस</td>
<td>बड़ा पेड़</td>
<td>फल</td>
<td>माइड्रेन</td>
<td>पीसकर</td>
<td>बाहरी</td>
<td>उर्दू, मुड़ा</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### सरणी 3 — शराब सम्बन्धी वीमारियों में प्रयुक्त विद्युत पादप

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>व्यायामनक नाम</th>
<th>वेधाचित्रित नाम</th>
<th>पादप प्रकार</th>
<th>पादप भाग</th>
<th>रोग</th>
<th>व्यवस्थापित विद्युत पादप</th>
<th>उपयोग विद्युत पादप</th>
<th>जाति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>अक्तन</td>
<td>क्लिनिकालिक जाहीरतिया बीआर</td>
<td>छोटा पेड़</td>
<td>पत्ती</td>
<td>खूंसी</td>
<td>पीसकर, मुड़े में मिलाकर</td>
<td>मुहूर</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>बाबासी</td>
<td>सीमित हेलीक्ष</td>
<td>बड़ा पेड़</td>
<td>पत्ती</td>
<td>खूंसी</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुंहार</td>
<td>मुइड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>बन्युराज</td>
<td>अयस्ना इन्डिया चुनौती पीता</td>
<td>पत्ता</td>
<td>जाड़</td>
<td>शायसती की</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुंहार</td>
<td>मुइड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>भर्षी</td>
<td>क्लिनिक फॉर माइड्रेन साइकेः लेटलस</td>
<td>छोटा पेड़</td>
<td>जाड़</td>
<td>दमार/खूंसी</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुंहार</td>
<td>उर्दू, मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>दिग्ना छोटी</td>
<td>प्ल्यूटरेट प्रजाति</td>
<td>फूदी</td>
<td>पूरा भाग</td>
<td>खूंसी</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुइड़ा</td>
<td>मुइड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>रेनी</td>
<td>सोलेनम उन्नतकार्य</td>
<td>छोटा पेड़</td>
<td>फल</td>
<td>खूंसी</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुइड़ा</td>
<td>मुइड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>युक्तिक्ष</td>
<td>युक्तिक्ष मैक्लेट कुक्कर</td>
<td>बड़ा पेड़</td>
<td>दुध</td>
<td>खूंसी</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुइड़ा</td>
<td>मुइड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या 4 — अन्य स्थापना समस्याओं के उपचार में प्रयुक्त विभिन्न पद्धति</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>-----------------------------------------------</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.सं. क्षेत्रीय नाम</td>
<td>प्रैक्टिकल नाम</td>
<td>पद्धति प्रकार</td>
<td>पद्धति भाग</td>
<td>रोग</td>
<td>नारे की विधि</td>
<td>प्रयोग, गुण</td>
<td>उपयोग, विधि</td>
<td>जाति</td>
</tr>
<tr>
<td>1. अच्छन</td>
<td>कैलोडिमिया जहाजकित्या</td>
<td>घोड़ा पेड़</td>
<td>दुब्ध</td>
<td>गोव्य</td>
<td>गोव्य शाखा</td>
<td>पीसकर, गुण में</td>
<td>भारी</td>
<td>मुड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>2. अच्छन</td>
<td>विशेषता नामकृत जहाजकित्या</td>
<td>घोड़ा पेड़</td>
<td>पली, तह</td>
<td>गोव्य/ भरन दर्रे</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3. अतील</td>
<td>इस्कोटिया मोटरीम</td>
<td>पीढ़ा</td>
<td>पली/ छाल</td>
<td>भरन दर्रे</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>उरति</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4. निरापदा/ कालेज</td>
<td>एड्डोरीमिया पैमाने कित्या</td>
<td>पीढ़ा</td>
<td>पली</td>
<td>बुढ़ारे/ भिगोना, पीसना</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>उरति, मुड़ा</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5. वेंग साग</td>
<td>सङ्ग्रह एलेक्ट्रिकल लिन.</td>
<td>पीढ़ा</td>
<td>पली</td>
<td>पीलिया</td>
<td>पकाकर</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>उरति, मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6. हुमर</td>
<td>कैलोडिम निलोरेडा</td>
<td>बड़ा पेड़</td>
<td>दुब्ध</td>
<td>वर्षासा</td>
<td>इसी तरह</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>7. हरजीतव</td>
<td>वाइटर फिगेरा डेब्रू</td>
<td>पली</td>
<td>पली</td>
<td>अधिक भाग</td>
<td>पीसकर</td>
<td>भारी</td>
<td>मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>8. नेल्सन</td>
<td>एलेक्ट्रिकल लॉजिफिकेशन</td>
<td>पीढ़ा</td>
<td>पली</td>
<td>गोव्यना</td>
<td>परिचय</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>9. नकेल</td>
<td>सैंटिगॉडा सात्यकित्या</td>
<td>घोड़ा पेड़</td>
<td>जड़</td>
<td>गोव्यना</td>
<td>पकाकर</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>उरति</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>10. सुमसुम</td>
<td>मालिक माहन्दूर</td>
<td>पीढ़ा</td>
<td>पली</td>
<td>अनिवार्य रोग</td>
<td>पकाकर</td>
<td>मुड़ा द्वारा</td>
<td>उरति, मुड़ा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>11. सतार</td>
<td>वेंमारेस रसिंमोसस</td>
<td>घोड़ा पेड़</td>
<td>जड़</td>
<td>पीलिया</td>
<td>पीसकर</td>
<td>मिश्रित के</td>
<td>उरति</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

*नोट:* उपयोग, विधि, जाति, गुण में विवरणों का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है।
की अपेक्षा काफी सत्ता है। जब यह देशक स्वायत्त तकनीकी
अपनी संस्था एवं पहचान बढ़ाने में लगी है। नीवी पीड़ित अपनी
परास्तारीक जीवन शैली को छोड़ अपनीगतकरण की ओर बढ़ रही है
जिसके कारण इस उपयोगी दान को जानने वालों की कमी
होती जा रही है। इस विविधता द्वारा हुए उपयोगी दान के मानव
समाज के वंशजों के लिए संपूर्ण करने हेतु इस पर शोध एवं
प्रलेख पेश कर के अवैधस्तिक महसूस की जा रही है। इन
वालों का ध्यान में रखकर अवैधस्तिकों द्वारा सम्पर्कत्व बनाए
कृप्या क्षेत्रों में उपलब्ध पाठ्यक्रमों के देश जीवनी उपयोगी
की जानकारी प्राप्त करने हेतु एक विविध सर्वेक्षण किया गया।

सामयिक एवं विधि

नियमित उद्देश्यों की पूर्व हेतु भारतीय ग्रेटँ के राजी जिले
को अवैधक श्रेष्ठ बनाए गया। अवैधक श्रेष्ठ के लिए अवैधकीय
वादपरिक्षण के दो प्रकारों से घायल बना दिया का विधान किया
गया। इसमें से कुल 200 पाठ्यक्रमों का चुना गया जोने मुदत: दो
विशेष विद्यालय, यथा मुदता एवं उद्देश्य का प्राकृतिक विवाह है। अवैधक
से संबंधित जानकारी का संकलन सहभागिता उपयोग, व्यवस्थित
साक्षात्कार एवं समूह चर्चा द्वारा किया गया। एकत्रित अवैधकीय
पीढ़ी की पहचान उपयोगी साहित्य विशेषज्ञताओं के वैधवानिकों
तथा सम्पर्कत्व व्यक्तियों के खरिसना। कुछ नमूनों की पहचान
सेंटर नेशनल हरबित्तर, कोलकाता द्वारा भी कृपया
गरी।

परिणाम एवं व्याख्या

शोध के दौरान 41 महापूर्ण अवैधकीय पीढ़ी की पहचान की
गई है जो अवैधकीय क्षेत्रों में होने वाले अवैधकों के उपचार
द्वारा लाया जाता है। 16 प्रकार के प्रान्त अवैधक एवं अन्य
सवारी विख्यात, 7-9 सिक्कों तक प्रभाव देने के लिए
किया जाता है। अवैधकीय पीढ़ी के विभिन्न भागों का प्रयोग
रेट, काफी अवधि के रूप में किया जाता है (सारिया 1-4)।

अन्तिम एवं पैरेक्षेन्स के उपचार में अनुमति, आर्म, भर्ती,
कूली कौशल और पेय की धान पीस एवं धान का इस्तेमाल में लाया
जाता है। एनी साइन, फ्लूडल, इसलिए तथा मुदता की पति घरी
साग-सब्जी के रूप में अवैधकीयों में काफी लोकप्रिय हैं एवं
अवैधकीय गुणों के लिए भी अवैधक है। तब जब साइन
साग-सब्जी की पति घरी के रूप में अवैधक एवं आर्म की
सम्पर्कत्व में उपयोग में लाया जाता है। फ्लूडल का पति
की धान का पावर पीस द्वारा पति द्वारा पति
के उपरचार में
साइन की पति उपरचार में
कूली की पति उपरचार में तकनीकी की धारण का तह्या में प्राप्त
प्रयोग किया जाता
है। जब उपरचार में
पति उपरचार में
साइन की पति
पति की धारण
के तह्या में
प्राप्त
प्रयोग
किया
जाता
है।
प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि पादप जैवविविधता के क्षेत्र में इन आदिवासियों का ज्ञान काफी विकसित है। ये विभिन्न प्रकार के पौधों का प्रयोग स्वास्थ्य उपचार में करते हैं। अतः इन पौधों की क्षमता एवं उपयोगिता की जांच एवं वैधता पर पूरी तरह गौर करना चाहिए।

आम्बार

लेखकगण विशेष सहयोग द्वारा यह अभावी अनुसंधान पत्रिका के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के प्रति आभारी हैं।

संदर्भ

1. भार एवं, रतन आर पी, विंडू आर के एवं कांबाला पी जे, द्राक्ष पुनर्नवीकरण इन खाद्य पदार्थों का उपयोग, भारतीय सामाजिक विभाग, 23 (3-4) (2001) 59.

2. भार आर, रतन आर पी, विंडू आर के एवं कुमारी एवं, शामन संका, द्राक्ष के आदिवासी समुदाय द्वारा प्रयुक्त विज्ञान, भारतीय शैक्षिक एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 12 (2) (2004) 230-235.

3. द्राक्ष पी एवं, विंडू आर के एवं कुमारी एवं, प्रामेत्रों विशेष गति साइकिल एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान एवं पत्रिका, ए रिसर्च पार्ट-1, न. 1991, 2009-212.

4. वीपी एवं द्राक्ष पी, विंडू आर एवं, विशेष गति साइकिल एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान एवं पत्रिका, ए रिसर्च पार्ट-1, 19 (3) (2002) 107.

5. कृषि एवं, रतन आर पी, कुमार एवं, रतन आर पी, विशेष गति साइकिल एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, ए रिसर्च पार्ट-1, 19 (3) (2002) 107.


7. भार आर, रतन आर पी, कुमार एवं, रतन आर पी, विशेष गति साइकिल एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 23 (3-4) (2006) 147-149.